तुम माताओं ने स्वर्ग की द्वार खोली है। बाकी भक्तिमार्ग की कोई भी बात है नहीं। शास्त्रों में क्या–2 लिख दिया है। उसको कहा जाता है दंत कथा। नॉवेल्स अलग चीज़ है, शास्त्र अलग चीज़ है। बाबा जो समझाते हैं वह बिल्कुल न्यारी चीज़ है। आशूक–माशूक का भी समझाया जाता है। वह एक शरीर पर आशूक होते हैं, विकार के लिए नहीं। शरीर पर मोहित हो जाते हैं। भक्तिमार्ग में भी आशूक–माशूक होते हैं। पूँछ वाले हनुमान को भी माशूक बनाते, तो सूढ़ वाले गणेश को भी माशूक बनाते हैं। ढेर को बनाते हैं। भक्तिमार्ग में तुम अनेकों के आशूक थे। सभी कहते हैं हे भगवान, हे राम। दुख में सभी उनको याद करते हैं। तुम आशूक–माशूक हो। सिमरण करते हैं– बाबा, आप आवेंगे तो हे भगवान, आप आवेंगे तो हम आपका ही बनेंगे। दूसरा न कोई। तो अभी बाप याद दिलाते हैं। बाप तो बच्चों को मालामाल कर देते हैं। यहाँ तो कितने दुख हैं। बच्चे भी ऐसे कपूत निकल पड़ते हैं जो बाप का गला ही काट लेते हैं। पैसा बरबाद कर देते हैं। बाप के होते बच्चा पैसे उड़ा देते हैं। बाप कुछ कह न सके; क्योंकि वारिस है। कलियुग का अंत है ना। यह तो अनुभवी है। बाबा ने रथ भी अनुभवी लिया है। बाप खुद समझाते हैं यह है भाग्यशाली रथ। इस मकान अथवा रथ में आत्मा बैठी है, जिसमें बाप बैठकर तुम बच्चों को हीरा जैसा देवता बनाते हैं। आगे थोड़े ही समझते थे। बिल्कुल तुच्छ बुद्धि थे। अभी तुम समझते हो। तो फिर अच्छी रीत पुरुषार्थ करना चाहिए। स्कूल में टाइम वेस्ट करने से नापास हो जावेंगे। बाप तुमको बहुत बड़ी लाटरी देते हैं। कोई राजा के घर जाकर जन्म लेते हैं तो जैसे लाटरी मिली ना। कंगाल है तो उनको लाटरी थोड़े ही कहेंगे। यह है सबसे ऊँच लाटरी। इसमें टाइम वेस्ट न करना चाहिए। बाबा जानते हैं माया की बॉक्सिंग है। घड़ी–2 माया देहअभिमान में लाती है। तुम्हारा बाप से योग है डायरैक्ट। सम्मुख बैठे हैं ना। इसलिए यहाँ रिफ्रेश होने आते हो ड्रामा अनुसार। बाप कहते हैं मैं तुमको जो समझाता हूँ वह धारण करना है। यह ज्ञान अभी तुमको मिलता है। फिर यह प्रायःलोप हो जाता है। ज्ञान है ही सद्गति के लिए। सद्गति मिल गई फिर ज्ञान की दरकार ही नहीं। सभी को सद्गति दे देता हूँ। ढेर आत्माएँ चली जाती हैं शांतिधाम में। बाकी ज्ञान किसको दें। फिर भक्ति चलती है। आधा कल्प यह वेद–शास्त्र आदि पढ़ते आए हो, जिससे दुर्गति ही होती है। कोई को सीधा कहो तो बिगड़ पड़ेंगे। अरे, तुम तो कहते हो भक्तों का फल भगवान देंगे। तो ज़रूर भक्ति दुर्गति है ना। तब तो बाप आकर सद्गति करते हैं। तुम शंकराचार्य को भी लिख सकते हो तुम तो पुजारी हो ना। पुजारी अपन को पूज्य कहला न सके। पूज्य होते हैं सतयुग में। पुजारी होते हैं कलियुग। यह सभी समझने की बातें हैं। यह भी गायन है ना जूतों में जाकर बैठते थे सुनने के लिए। सुनते–2 फिर युक्ति से समझा सकते हैं। जब उनसे 5–7 निकल आवेंगे तब वह भी समझेंगे, यह क्या बात है। अभी नहीं समझेंगे।

मूल बात समझाई जाती है बाप को याद करो तो तुम्हारे जन्म–जन्मांतर के विकर्म विनाश होंगे। यह नॉलेज है सोर्स ऑफ इनकम। तुम पदमापदम भाग्यशाली बनते हो। स्वर्ग के मालिक बनते हो। वहाँ तो सभी सुखी हैं। बाप याद दिलाते हैं तुमको कितने स्वर्ग के सुख दिए थे। तुम विश्व के मालिक थे। फिर सब गंवाए दिया। रावण के गुलाम बन गए हो। राम और रावण का यह वण्डरफुल खेल है। बाप समझाते हैं यह फिर भी होगा। अनादि बना–बनाया खेल है। कब बना यह नहीं (कह) सकते। बाप समझाते हैं इन गुरुओं आदि को मारो गोली। यह सभी भक्तिमार्ग के हैं। गायन भी है सतगुरु तारे। बाकी बोरे कौन? असत्य बोलने वाले बोरते हैं। समझने की बात है ना। सन्यासी लोग घर–बार छोड़ कर जाते हैं। ऑरफन बना देते हैं। उनको तुम गुरु कैसे कहते हो? अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

शिवबाबा याद है? स्वर्ग की बादशाही याद है? दैवीगुण धारण है?